ग्लीम और ग्लो

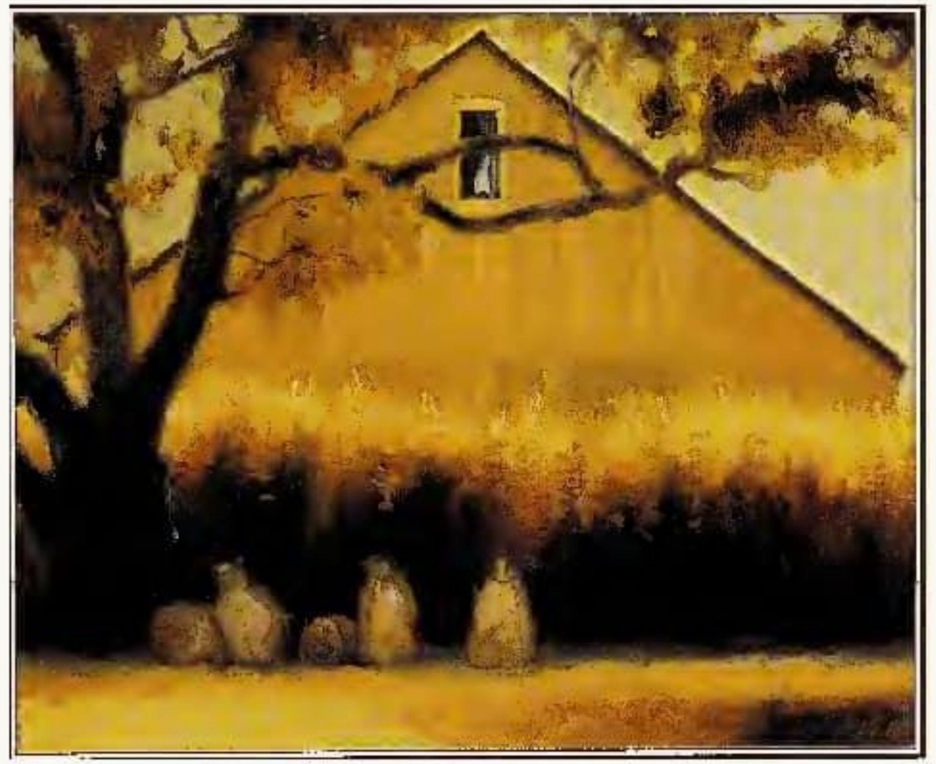


ईव बंटिंग

चित्रकार: पीटर सिल्वाडा



ग्लीम और ग्लो



ईव बंटिंग

चित्रकार: पीटर सिल्वाडा



जब पापा अंडरग्राउंड में शामिल होने के लिए गए, तो मरीना रो पड़ी। सच कहूँ तो, मैं और माँ भी रोए थे।

"मैं नहीं चाहती कि पापा अंडरग्राउंड रहें," मरीना ने सिसकते हुए कहा।

"चुप रहो, छुटकी," माँ ने कहा। "इसका मतलब है कि पापा हमारे ही आदमियों के साथ छिपकर लड़ेंगे। ज़मीन के ऊपर।"

मैंने मरीना को दया भरी नज़र से देखा। वह सिर्फ़ पाँच साल की है और ज़्यादा कुछ नहीं जानती है। मैं आठ साल का हूँ और बहुत कुछ जानता हूँ।

जाने से पहले पापा ने मरीना को सब कुछ समझाने की कोशिश की थी।

उसने पापा से पूछा, "वे लोग हमें पसंद क्यों नहीं करते?"

मुझे भी नहीं पता था कि ऐसा क्यों हुआ, लेकिन मैंने अपनी आँखें घुमाईं और ऐसा दिखाया जैसे कि मुझे पता हो।

"हम उनसे अलग हैं," पापा ने मरीना से कहा। "उन्हें लगता है कि यह उनका देश है और वे नहीं चाहते कि हम यहाँ रहें। लेकिन यह देश हमारा भी है। मैं लिबरेशन आर्मी से लड़ूँगा ताकि वे हमें हमारे ही देश से बाहर न निकाल सकें।" फिर पापा ने मेरे कंधे पर हाथ रखा। "विक्टर, अब तुम घर के मर्द हो। अपनी माँ की अच्छी तरह से मदद करना।"

और फिर पापा चले गए ।

"मैं वापस आऊंगा," पापा ने कहा। लेकिन मुझे चिंता थी। क्या होगा अगर पापा वापस आए, और हम यहां न हुए?



माँ ने कहा कि हमें जल्द ही निकलना होगा। वहां ज़्यादा देर रुकना बहुत खतरनाक होता जा रहा था। हमारे दुश्मन आ रहे थे, वो बड़ी तेजी से गाँवों में घुस रहे थे, लोगों को ज़बरदस्ती बाहर निकाल रहे थे और उनके घर जला रहे थे।

हर दिन हम दूर से गोलियों की आवाज़ सुनते, और दूर आसमान में धुआँ उठते देखते थे।

हर दिन, देश से पलायन करते हुए अजनबी लोग रुकते थे, अपना सामान नीचे रखकर, हमारा खाना खाते थे, और हमारी छत के नीचे पनाह लेते थे। वे भयानक कहानियाँ सुनाते थे कि सैनिकों ने उनके और पड़ोसियों के साथ कैसा सलूक किया था। लोग बात करते-करते रोने लगते थे। उनकी आँखें इधर-उधर घूमती रहती थीं, जैसे उन्हें लग रहा हो कि सैनिक हमारे दरवाज़े पर ही आकर खड़े हों।

जब उनकी कहानियाँ बहुत कष्टदायक हो जाती थीं, तो माँ मुझे और मरीना को ताजा पानी लाने के लिए तालाब पर, या आलू खोदने के लिए खेत में भेज देती थीं।

लेकिन तब तक हमने बहुत कुछ सुन लिया होता था।

मरीना ने फिर से अपना अंगूठा चूसना शुरू कर दिया, और मैंने लगातार तीन रातों तक बिस्तर गीला किया।

माँ ने मुझे अपने पास खींचा। "सब ठीक है, विक्टर। कोई खास नुकसान नहीं हुआ है।"



एक दिन एक परिवार ट्रैक्टर पर आया। उनके साथ मेरी उम्र का एक लड़का भी था जिसका नाम एलेक्सा था। उसके साथ एक कुत्ता भी था जो करतब दिखाता था। एलेक्सा को अपने कुते की करतबें दिखाना पसंद था।

मैंने उनसे कहा, "मेरे पिता अंडरग्राउंड में हैं," और मुझे उस बात पर काफी गर्व महसूस हुआ। अंडरग्राउंड में पिता का होना, ऐसे कुते के होने से बेहतर था जो करतब दिखा सके।

अगली सुबह मैंने उन्हें जाते हुए देखा। हमारे पास ट्रैक्टर नहीं था। मुझे पता था कि जब हम निकलेंगे, तब हमें पैदल ही चलना होगा।



कुछ दिनों बाद एक आदमी आया। उसकी पीठ पर एक भारी बैग बंधा था। उसके पास एक पानी का कटोरा था जिसमें दो मछलियाँ तैर रही थीं। उसने कटोरा हमारी टेबल पर रख दिया। उन्हें देखकर मुझे ऐसा लगा जैसे दुनिया की सारी रोशनी उस कांच के कटोरे में कैद हो।

“मैं उन्हें और आगे नहीं ले जा सकता,” आदमी ने कहा। “क्या तुम उन्हें रखोगे? वे बहुत ही अद्‌भुत मछलियाँ हैं।”

माँ ने सिर हिलाया, “देखो भाई, हम एक-दो दिन में घर छोड़कर निकल रहे हैं।”

मरीना उछल पड़ी। “प्लीज़, मम्मा! क्या वे सुंदर नहीं हैं? मैंने अभी-अभी उनके नाम सोचे हैं। ग्लीम और ग्लो।”

आदमी ने आह भरी। “जब तुम जाओ तो उन्हें यहीं छोड़ देना। एक-दो दिन की अतिरिक्त ज़िंदगी उन मछलियों के लिए भी उतनी ही ज़रूरी है जितनी हम इंसानों के लिए। यह रहा उनका खाना।” उसने मरीना को कागज़ की पुड़िया दी। “हर दिन पानी के ऊपर इसे थोड़ा सा छिड़क देना।”

“मैं जरूर करूंगी।” मरीना ने वादा किया।

दो दिनों तक उसने उन मछलियों को खाना खिलाया, उनसे बातें कीं और अपनी उंगली से उन्हें सहलाने की भी कोशिश की।

“मुझे ग्लीम और ग्लो बहुत पसंद हैं,” उसने माँ से कहा। “मैं उन्हें दिल से प्यार करती हूँ।”



तीन दिन बाद माँ ने कहा कि हम और इंतज़ार नहीं कर सकते, “मैं तब तक रुकना चाहती थी जब तक मौसम गर्म न हो जाए,” माँ ने धीरे से कहा, जैसे वो खुद से कह ही हों। “क्योंकि छुटकी के लिए ठंड बहुत मुश्किल होगी।” मुझे पता था कि उन्हें पिछले साल मरीना को हुआ निमोनिया याद आ रहा होगा।

“कल सुबह हम जल्दी निकलेंगे,” उसने हमसे कहा। “हमें बॉर्डर के आगे वाले सुरक्षित देश तक पहुँचना होगा।”

मैंने ट्रैक्टर की इच्छा जताते हुए पूछा, "क्या उतना पैदल चलना कठिन नहीं होगा?"

“हाँ जरूर, लेकिन हम वहाँ पहुँचना होगा।”

“प्लीज़, प्लीज़, क्या हम ग्लीम और ग्लो को अपने साथ ले जा सकते हैं?” मरीना ने विनती की। “मैं उन्हें ले जाऊँगी।”

“तुम ऐसा नहीं कर सकतीं, मरीना,” माँ ने कहा। “हमें मछलियों को यहीं छोड़ना होगा। लेकिन सोचो, शायद हम तुम्हारे पिता को ढूंढ पाएं। और क्या वो अच्छा नहीं होगा?”

मुझे लगा कि शायद मां हमें उम्मीद दिलाने की कोशिश कर रही थीं, लेकिन उससे भी मरीना को शांति नहीं मिली। वह उस रात माँ के साथ सोई, और मैंने उसे बहुत देर तक रोते हुए सुना, फिर जब वो शांत हुई तो मुझे पता चला कि वह सो गई थी।



मैं अपने कमरे में इधर-उधर देख रहा था, अपनी यादों में खोया हुआ था। शेल्फ पर मेरी किताबें सजी थीं जिसे पापा ने मेरे लिए बनाया था। मेरी पेंटिंग को मम्मी ने फ्रेम करवाया था।

मैंने सोचा कि मरीना के लिए अपनी मछली को छोड़ना कितना मुश्किल होगा।

जब घड़ी में आधी रात हुई, तो मैं उठा, और मैं मछली का कटोरा बाहर तालाब के पास ले गया, और फिर मैंने ग्लीम और ग्लो को तालाब में छोड़ दिया। वे तालाब के किनारे उलझी हुई घास-फूस में चमक उठीं। मैंने उनका बचा हुआ खाना भी पानी पर छिड़क दिया। "ज़िंदगी के एक-दो दिन और," मैंने धीरे से कहा। "गुड-लक।"

हमें भी अच्छे भाग्य की ज़रूरत होगी।

सुबह-सुबह माँ ने हमें जगाया। जब मैंने उन्हें मछलियों के बारे में बताया, तो हम यह देखने के लिए बाहर गए कि वे रात में बचीं, या नहीं। मरीना ने ताली बजाई और उनके नाम पुकारे, लेकिन ग्लीम और ग्लो कहीं नज़र नहीं आईं।

“शायद वे सो रही हों,” उसने कहा। “मुझे पता है कि उन्हें हमारा तालाब बहुत पसंद आएगा।”



अब हमारा ले जाने वाला सामान तैयार था। माँ और मेरे लिए दो-दो बंडल थे और मरीना के लिए एक छोटा बंडल था।

हमारे घर के बाहर सड़क पर हल्की-हल्की परछाइयाँ थीं। जब हम कुछ दूर पहुंचे, तो मैंने एक बार पीछे मुड़कर देखा। वहाँ हमारा बांझ (ओक) का पेड़ खड़ा था, सब्ज़ियों का खेत था, माँ का फूलों का बगीचा था, जहाँ ज़मीन के नीचे सोते बीज बसंत का इंतज़ार कर रहे थे। क्या हम कभी दोबारा घर लौटेंगे? क्या पापा हमें कभी ढूँढ़ पाएँगे?



हम चलते रहे और चलते रहे।

हम धीमे चल रहे थे इसलिए कई लोग हमसे आगे निकल गए। लेकिन कुछ लोग हमारी ही रफ़्तार से चल रहे थे, और उन्होंने हमें जो दर्दनाक बातें बताईं, उनसे हमें लगा कि विपत्ति आने से पहले ही हमारा घर छोड़ना सही था।

हम चलते रहे और चलते रहे।

एक आदमी जिसके पास ठेला था, उसने मरीना को पूरे दिन अपने ठेले पर बिठाया। उसने माँ का एक बंडल और मेरा एक बंडल भी ले लिया। वह अब तक का सबसे अच्छा दिन था।

रात में हम किसी खेत या खलिहान में सोते। एक रात बहुत ज़्यादा बारिश हुई, लेकिन हम खुशकिस्मत थे कि हमें एक सुनसान घर मिल गया और हम अच्छी तरह सो पाए।

एक बार हमारी लिबरेशन आर्मी के कुछ लोग आए और उन्होंने हमारे साथ चिकन साझा किया। उस रात हमने भरपेट चिकन खाया।

मरीना ने पूछा, "क्या आप हमारे पापा को जानते हैं?" लेकिन वे पापा को नहीं जानते थे।

हम पापा को ढूंढते रहे, कभी-कभी लगता कि हमने उन्हें देखा है। लेकिन वह हमेशा कोई अजनबी होता, जो बिल्कुल उनके जैसा दिखता था।

कई बार मरीना और मैंने मां से रुकने की बहुत गुज़ारिश की। हम और आगे नहीं जा सकते थे। लेकिन माँ की इच्छाशक्ति हमें आगे खींचकर ले गई।



और फिर, एक सुबह, हमने अपने आगे चल रहे लोगों को खुशी से चिल्लाते हुए सुना। कोई चिल्लाया, “मुझे बॉर्डर दिख रहा है! हम वहाँ लगभग पहुँच ही गए हैं।” पूरी लाइन में सब लोग तब तक खुशी से चिल्लाते रहे जब तक हमारे गले दुखने नहीं लगे।

बॉर्डर पार करने के बाद सबकुछ ठीक हो गया। हमारे रहने के लिए वहां तंबूओं एक कैंप था; खाना था, और उसे पकाने के लिए आग थी। वहां हमने अपने कपड़े और खुद को भी धोया। कैंप में और भी बच्चे थे। मेरी दोस्ती बेहार और एडमिर नाम के दो लड़कों से हुई, और हम साथ-साथ खेलते थे। हमें दीवार पर लिबरेशन आर्मी के नाम के पहले अक्षर लिखने की इजाज़त मिली जिससे हमें अच्छा लगा, जैसे हम अपने देश को आज़ाद कराने वाले फौजियों के साथ लड़ रहे हों।



काफी समय तक हम कैंप में ही रहे और फिर एक दिन पापा ने हमें ढूंढ निकाला।

एक शाम मैंने ऊपर देखा और पापा वहाँ खड़े थे, गंदे और पतले—लेकिन सुंदर। मरीना और मैं खुशी से चिल्लाए। फिर उन्होंने हम दोनों को उठाया और हमारे चेहरों को बार-बार चूमा। माँ आँसू बहाते हुए खड़ी थीं। पापा ने उन्हें अपने पास खींचा और उनके बालों में कुछ फुसफुसाया। मां ने अपनी उंगलियों से पापा के चेहरे को ऐसे छुआ जैसे उन्हें लगा हो कि वह बस एक सपना था। "क्या तुम सच में यहाँ हो?"

"मैं यहाँ हूँ," पापा ने धीरे से कहा। "यह एक चमत्कार है कि मैंने तुम्हें खोज पाया। मैंने लोगों से पूछा और पूछा। मैंने लगातार लोगों से पूछता रहा।"

मरीना ने उनके पैर को खींचते हुए पूछा, "क्या अब आप रुक सकते हैं, पापा?"

"हाँ, छुटकी।" पापा मुस्कुराए। मुझे नहीं पता था कि पापा वहां कैसे रुकेंगे। पर उनका वहां होना ही काफी था।

मैंने पूछा, "क्या अब हम घर जा सकते हैं, पापा?"

"अभी नहीं, विक्टर। लेकिन जल्द ही।"



उसके कई महीने बाद हमें बताया गया कि अब वहां से निकलना सुरक्षित होगा। उस रात हम सबने टेंट की लाइनों के बीच डांस किया। वह एक बहुत अच्छी और खुशियों से भरी पार्टी थी।



अगले दिन हम घर के लिए लंबी पैदल यात्रा पर निकल पड़े।

वापसी की यात्रा बहुत दुखद थी। हमें रास्ते में कोई घर, कोई खेत, कोई जानवर नहीं दिखे, बस मलबा और बड़े-बड़े गड्ढे दिखे जहाँ बम गिरे थे।

हम चलते रहे और चलते रहे।

मुझे पता था कि हमारा घर भी टूट चुका होगा। मैं यह बात जानना नहीं चाहता था, लेकिन किसी तरह मुझे उसका आभास हो गया था। पापा ने मरीना को अपने कंधों पर उठाया। वह ख़ुशी से बड़बड़ा रही थी।

मरीना अकेली थी जो सोचती थी कि हमारी पुरानी ज़िंदगी हमारा इंतज़ार कर रही होगी।



जब मैंने ओक के पेड़ को अभी भी खड़ा देखा, तो मेरे दिल में कुछ उम्मीद जगी।

मैंने माँ का हाथ पकड़ लिया। शायद सब ठीक-ठाक हो।

फिर मैंने पेड़ के पार देखा। हमारे घर का अब सिर्फ़ एक कंकाल ही बचा था। माँ के बगीचे में कुछ फूल खिले हुए थे। उसके अलावा, हम चाँद पर हो सकते थे।

मरीना को सबसे पहले मछलियाँ याद आयीं। उसने माँ के बंडल से ब्रेड का एक बासी टुकड़ा निकाला और ग्लीम और ग्लो का नाम पुकारते हुए तालाब की ओर दौड़ी। हम भी उसके पीछे-पीछे दौड़े।



और वहाँ हमारा तालाब था, जो किसी पिघले हुए सोने की तरह चमक रहा था। तालाब अनगिनत मछलियों से भरा हुआ था।

माँ ने अपने हाथों को अपने दिल पर रखा। "ग्लीम और ग्लो और उनके बच्चे और उनके बच्चों के बच्चे," माँ ने कहा।

पापा ने कहा, "उन्हें वहाँ खूब पोषण मिला होगा।"

मरीना ने ताली बजाई और कहा, “देखो वो कितनी स्मार्ट मछलियाँ है।"

"तमाम विपत्तियों के बावजूद, वे मछलियाँ बच गईं," माँ ने फुसफुसाते हुए कहा।

मैंने सोचा, हमारी तरह ही मछलियाँ भी ज़िंदा रहीं।

“ग्लीम! ग्लो!” मरीना ने पुकारा और पानी में ब्रेड के टुकड़े डाले। एक के बाद एक मछलियाँ तालाब के किनारे आईं जहाँ पर मरीना घुटनों के बल बैठी थी। “देखो!” उसने इशारा किया। “वह ग्लीम है और यह ग्लो है।”

यह सुन हमें हंसी आ गई, क्योंकि वे मछलियां बिल्कुल एक-जैसी थीं।

“क्या तुम्हें मेरी याद आई?” मरीना ने उनसे पूछा। “मुझे तुम्हारी बहुत याद आई।”

मैं पानी के नीचे झुका। “हम वापस आ गए हैं, ग्लीम एंड ग्लो,” मैंने मछलियों से कहा। “अब हम घर वापिस आ गए हैं।”



लेखक का नोट

बोस्निया-हर्जेगोविना में जेज़ेरो नाम का एक गाँव है। 1990 में, बोस्नियाई युद्ध से पहले, स्माजो माल्कोक नाम के एक गाँववाले ने अपने बेटों को एक एक्वेरियम में दो सुनहरी मछलियाँ दीं।

जब युद्ध शुरू हुआ, तो माल्कोक का परिवार बोस्नियाई-सर्ब सेना से भाग निकला। मछलियों को बचाने के लिए उसकी पत्नी ने उन्हें पास की एक झील में छोड़ दिया।

1995 में, जब परिवार युद्ध के बाद घर वापिस लौटा, तो उन्होंने देखा कि उनका घर और पूरा गांव पूरी तरह तबाह हो चुका था। लेकिन, झील जीवन से भरी थी—वह चमकती हुई सुनहरी मछलियों से भरी थी। अकेला छोड़ दिया जाने के बाद, मछलियों को झील के पानी में भरपूर खाना मिला। उससे मछलियाँ फली-फूली और उनकी संख्या बढ़ गई।

इस अनोखी खबर को सुनकर, लोग मछलियों को देखने और खरीदने आए। मछलियाँ न सिर्फ़ सुंदर थीं वे कीमती भी थीं। मछलियों के कारण माल्कोक और उसके पड़ोसियों को खुशहाली और शोहरत मिली, और गाँव फिर से बस गया।

ग्लीम एंड ग्लो इसी सच्ची और जादुई कहानी से प्रेरित है। यह कहानी किसी खास देश या विशेष लोगों की कहानी नहीं है—यह कहानी हर देश के उन शरणार्थियों के लिए है जिन्हें मजबूरी में अपनी जानी-पहचानी ज़िंदगी को छोड़ना पड़ा, और जिन्हे सबसे अनचाही जगहों पर उम्मीद ढूँढ़नी पड़ी।

ईव बंटिंग अपनी संवेदनशील कहानी कहने के तरीके के लिए मशहूर हैं। उन्होंने युवा पाठकों के लिए दो सौ से ज़्यादा किताबें लिखी हैं, जिसमें कैल्डेकॉट मेडल-विनर *स्मोकी नाइट* भी शामिल है। उन्हें मिले कई सम्मानों में उनके काम के लिए मशहूर केरलन अवॉर्ड भी शामिल है। ईव बंटिंग अपने पति के साथ दक्षिणी कैलिफ़ोर्निया में रहती हैं।

पीटर सिल्वाडा ने कैलिफ़ोर्निया के पासाडेना में आर्ट सेंटर कॉलेज ऑफ़ डिज़ाइन से ग्रेजुएशन किया। स्टीव शुच की लिखी *'ए सिम्फनी ऑफ़ व्हेल्स'* उनकी पहली पिक्चर बुक थी; इसने क्रिस्टोफर मेडल जीता और इसे न्यूयॉर्क टाइम्स बुक रिव्यू; बेस्ट इलस्ट्रेटेड बुक और स्मिथसोनियन मैगज़ीन की नोटेबल बुक का नाम दिया गया। मिस्टर सिल्वाडा कैलिफ़ोर्निया के सैन डिएगो के पास रहते हैं।

